दिनांक- 6-7-2020

स्नातक प्रतिष्ठा (हिन्दी) प्रथम खंड के छात्रों के लिए

चित्रलेखा उपन्यास के आधार पर चित्रलेखा का चरित्र चित्रण करें।

प्राध्यापक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक, हिन्दी विभाग
एस० एन० कॉलेज, जहानाबाद।

चित्रलेखा भगवती चरण वर्मा की एक ऐसी कृति है जो न केवल हिंदी भाषा में प्रस्तुत किए साहित्य में भी अपनी अलग पहचान रखती है। इसमें जीवन के शाश्वत प्रश्नों को उपजीव्य बनाकर औपन्यासिक चरित्रों का संयोजन हुआ है। पाप और पुण्य के द्वन्द्व में डूबते-उतराते मानव मात्र के मन में उठनेवाले संघातों का ऐसा उचित विवेचन-विश्लेषण अन्यत्र दुर्लभ है।

चित्रलेखा इस उपन्यास की नायिका है। समस्त औपन्यासिक घटनाएं चित्रलेखा को केन्द्र में रखकर ही घटित होती है। वह एक गतिशील पात्र है इसके कारण उसकी गतिविधियां परिस्थितियों के अनुरूप बदलती या परिवर्तित होती रहती है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्नांकित शीर्षकों में विभाजित कर विवेचित कर सकते हैं-

अपरूप सुन्दरी

चित्रलेखा अत्यन्त रूपवती नारी है। उसके रूप पर जनसमुदाय लुब्ध है। कृष्णादित्य, बीजगुप्त, कुमारगिरि, श्वेतांक - प्रत्येक उसके रूप से प्रभावित हो अपना सर्वस्व उस पर न्योछावर करने को तत्पर हैं। विधवा होकर भी राजनर्तकी तक की यात्रा में इसका सौन्दर्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। चित्रलेखा के सौन्दर्य की प्रभावमयता को स्पष्ट करता

हुआ उपन्यासकार लिखता है- "पाटलिपुत्र का जनसमुदाय चित्रलेखा के पैरों पर लोटा करता था। - - - जनसमुदाय के सामने वह असाधारण सुन्दरी आती थी और विद्युत की भांति चमककर वह उनके सामने से लोप हो जाती थी। जिसने उसे एक बार देखा, उसके हृदय में उसे एक बार फिर देखने की अमिट साध उत्पन्न हो गयी।"

जन सामान्य की बात तो दूर योगी कुमारगिरि जैसा वीतरागी, तपस्वी और जनरव से दूर रहने वाला संन्यासी भी प्रथम दर्शन में ही उससे अप्रभावित न रह सका - "योगी ने नर्तकी में ज्ञान देखा और नर्तकी ने योगी में सौन्दर्य।" वैसे ही श्वेतांक भी बीजगुप्त के घर में रहकर चित्रलेखा के रूप पर रीझ जाता है और समय आने पर अपनी मनःस्थिति उसके सामने स्पष्ट भी कर देता है। जन समुदाय ही नहीं चित्रलेखा भी अपने रूप से परिचित है जिसका समय-समय पर यथोचित उपयोग करती है।

<u>बुद्धिमती एवं तार्किक</u>

चित्रलेखा जितनी सुन्दर है उतनी ही प्रखर उसकी बुद्धि है। उसके तर्क के सामने बड़े-बड़े तर्कशास्त्री पराजित हो जाते हैं। जब पहली बार मार्ग भूल कर बीजगुप्त के साथ चित्रलेखा योगी कुमारगिरि की कुटिया में पहुंचती है तब योगी स्त्री होने के कारण उसे आश्रय देने में संकोच करता है। योगी की मान्यता है कि स्त्री अंधकार है, मोह, माया और वासना है। ज्ञान के आलोक में स्त्री का कोई स्थान नहीं है। योगी के विचारों को सुनकर चित्रलेखा की तीखी प्रतिक्रिया उसके अभिवादन में व्यक्त हो जाती है - "प्रकाश पर लुब्ध पतंग को अंधकार का प्रणाम है।" यह एक असाधारण अभिवादन था जिसके संक्षिप्त शब्दों में गहरा व्यंग्य, और साधना के प्रति घोर उपेक्षा छिपी थी। चित्रलेखा के तर्क अकाट्य हैं। जब योगी कुमारगिरि उसे समझाते

है कि "सत्य एक है, वास्तविकता का ज्ञान। मार्ग वही ठीक है जिससे शान्ति एवं सुख मिल सके।" उत्तर में चित्रलेखा कहती है- शान्ति और सुख! शान्ति अकर्मण्यता का दूसरा नाम है, और रहा सुख, उसकी परिभाषा एक नहीं।" संपूर्ण कथानक में चित्रलेखा के तर्कों की अनुगूंज सुनाई देती है। चाहे महामंत्री चाणक्य हों, या बीजगुप्त कुमारगिरि या श्वेतांक, चाहे यशोधरा हो या सामंत मृत्युंजय सब उसके तर्कों के आगे मौन हो जाते हैं। उसकी बौद्धिकता और उसके तर्क उसके व्यक्तित्व को उच्च कोटि की गरिमा प्रदान करते हैं।

शेष अगले दिन